नाम — साध्वी द्विवेदी

मो0नं0 — 6386826770

सतत विकास के लक्ष्यों की पूर्ति में युवाओं की भूमिका–

सतत विकास के लक्ष्यों की पूर्ति में युवाओं की भूमिका किसी भी देश में सतत विकास की पूर्ति के लिए युवा एक अभिन्न अंग माना जाता है–

प्रस्तावना–

संसाधन का विकास शिक्षा के क्षेत्र में राजनीतिक क्षेत्र में कृषि क्षेत्र में सर्वप्रथम युवा अपने देश के लिए समर्पित होना चाहिए।और यदि वह कुछ कर सकता है उसके आधार क्या है निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से दर्शाया गया है।

नित सुबह सवेरे आठों याम जन गण मन का ध्यान करो

दिवा रात्रि नहीं है अल्प लब्ध्य कर्तव्यों का अनुगमन करो

क्या दिया है तुमने राष्ट्र को अपने अन्तमन से ये प्रश्न करो,

सतत विकास के लक्ष्यों की पूर्ति में अब तो कुछ जतन करो

शिक्षा के आधार पर युवाओं की भूमिका–

शिक्षा के आधार पर हम सभी जानते हैं युवा ही भविष्य है इसलिए सर्वप्रथम यदि आज की युवा शिक्षित है तो आने वाली पीढ़ी निश्चित रूप से शिक्षित होगी क्योंकि सरकार भी यदि एक सरकारी शिक्षिका की बात करें तो सरकार उसके लिए पहले क.म्क सीटेट आज तमाम परीक्षाओं का चयन करवाता है तभी हम इस परीक्षाओं में उत्तीर्ण कर पाते हैं जिससे चयनित होकर सरकारी जूनियर प्राइमरी विद्यालयों में जाते हैं और आने वाली पीढ़ी को शिक्षित करते जो कि आने वाले समय में देश का भविष्य होगा इसलिए मुझे लगता है कि शिक्षा के आधार पर सतत विकास में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है।

राजनीतिक क्षेत्र के आधार पर युवाओं की भूमिका–

राजनीतिक क्षेत्र के आधार पर युवाओं की सतत विकास में भूमिका हम जानते हैं यदि युवा शिक्षित है और वह सब राजनीतिक क्षेत्र में जाता है तो निश्चित रूप से वह क्षेत्रीय था जातीयता से ऊपर उठकर देश के विकास के बारे में सोचेगा क्योंकि एक शिक्षित युवा अपने देश को किस प्रकार सशक्त बनाया जाए किस प्रकार विकसित

किया जाए इसके बारे में सोचता है तो कहीं ना कहीं राजनैतिक क्षेत्र के आधार पर भी सतत विकास के लक्ष्यों की पूर्ति पर युवाओं की अहम भूमिका देखी जा सकती है।

कृषि क्षेत्र के आधार पर युवाओं की भूमिका– हम सभी जानते हैं आज की युवा की बुद्धि का स्तर इतना ज्यादा है जिससे वह किसी भी क्षेत्र में रहकर अपना जीविकोपार्जन कर सकता है।

इसी प्रकार हम सभी यह भी जानते हैं कि भारत देश एक कृषि प्रधान देश है और यदि वह आज की तकनीकी माध्यम से किसी के क्षेत्र में अपना सहयोग देती है तो कहीं ना कहीं यह भी सतत विकास के लक्ष्यों की पूर्ति में एक महत्वपूर्ण भूमिका है।

हम सभी जानते हैं कि यह देश के विकास की युवाओं की भूमिका की बात की जाए तो आज की युवा को कुछ दोषपूर्ण गतिविधियां भी हैं जिसे आज की युवा को त्यागना चाहिए।

दोषपूर्ण गतिविधियां यदि हम दोषपूर्ण गतिविधियों की बात करें तो सबसे पहले युवा को नशा मुक्त होना चाहिए क्योंकि एक स्वस्थ युवा शारीरिक और मानसिक दोनों ही रूप से जब स्वस्थ हो तभी वह देश के सतत विकास में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकता है।

महत्वपूर्ण बिंदु हम सभी जानते हैं कि आज अपनी सांस्कृतिक परंपरा के साथ ही विकास की ओर अग्रसर होगा क्योंकि जितने भी विकसित देश रहे उन्होंने अपने सांस्कृतिक परंपरा रीति रिवाजों को कभी नहीं छोड़ा है।

इस प्रकार सतत विकास के लक्ष्यों की पूर्ति में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है।

निष्कर्ष– जैसा कि युवाओं का प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद को माना जाता है उन्हीं का एक कथन है यदि 20 युवा मिल जाए तो क्रांति आ जाएगा और युवाओं की संख्या 20 से ज्यादा हो जाए तो हम सोच सकते हैं विकास निश्चित है।